अहा! ज़िंदगी
सितम्बर 2010 । मूल्य रु. 25
तन-मन-जीवन की पहली सम्पूर्ण पत्रिका

किताबघर

न्याय का व्यावहारिक दर्शन

पुस्तक : न्याय का स्वरूप, लेखक : डॉ. अमर्त्य सेन, अनुवादक : भवानीशंकर बागला,
प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली–06
पृष्ठ संख्या : 384, मूल्य : 425 रुपए

प्रस्तुत पुस्तक *न्याय का स्वरूप* '*द आइडिया ऑफ जस्टिस*' का हिन्दी अनुवाद है। जाने-माने अर्थशास्त्री नोबेल विजेता अमर्त्य सेन ने अपनी पुस्तक *न्याय का स्वरूप* में न्याय की विभिन्न परिभाषाओं और परिकल्पनाओं पर गहनता से विचार किया है। उनका मानना है कि न्याय को अभी तक वो दिशा नहीं मिल पाई है जो उसे मिलनी चाहिए थी। न्याय एक ऐसा आदर्श है, जो आज भी जनसाधारण की पहुंच से कोसों दूर है। यह भी विचार करने वाली बात है कि वर्तमान न्याय व्यवस्था में जीवन-मूल्यों की रक्षा और वृद्धि कहां तक हो पाती है। इस गंभीर विषय पर संसार के लोकप्रिय विचारकों *हॉब्स, कांट, लॉक, रूसो* आदि ने समय-समय पर विचार किया है और इतना ही नहीं वे तत्कालीन नीतिकारों के विचारों से प्रभावित रहे हैं। इस पुस्तक में न्याय, विशेषकर सामाजिक न्याय के स्वरूप को परिभाषित करने का, विभिन्न दृष्टिकोणों से उसे परखने का प्रयत्न किया गया है। यह एक उपयोगी पुस्तक है, जो नई सोच के साथ न्याय की व्यवस्था के सभी पहलूओं पर मौलिक विचार प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक इस बात को स्थापित करती है कि न्याय अपने आप में कोई अलग-थलग चीज नहीं है, यह सामाजिक ढांचे, संस्कृति और व्यवस्था से जुड़ी वस्तु है। अतः इस पुस्तक में न्याय पर विमर्श के जरिए अमर्त्य सेन समाज, संस्कृति, इतिहास, व्यवस्था आदि का एक बड़ा परिप्रेक्ष्य सामने रखते हैं।